Paper-II Sociology (Honours) Part-I

E. Study Material For B.A. Part-I

By - Dr. Ramesh Singh
G.D. College, Bagaha
Mob. - 6394653523

पुरुषार्थ

पुरुषार्थ का अर्थ :

पुरुषार्थ का शाब्दिक अर्थ होता है 'उद्योग' अर्थात 'व्यक्ति की कर्मशीलता' पुरुषार्थ का संधि-विच्छेद किया जाए तो उसका अर्थ हुआ पुरुष + अर्थ। इसी पुरुषार्थ के अनुसार व्यक्ति के जीवन के कुछ उद्देश्य ऐसे हैं, जिसकी पूर्ति उसे अवश्य करनी चाहिए। संस्कृत में पुरुषार्थ को पुरुषैर्थ ने 'पुरुषार्थ्य' कहा है। हिन्दू समाज के अनुसार मानव जीवन के चार उद्देश्य हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म नैतिक आवश्यकताओं एवं मूल्यों की पूर्ति के लिए अर्थ आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा काम मनोशारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मोक्ष मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। मानव जीवन के इन्हीं चार उद्देश्यों को पुरुषार्थ कहा जाता है।

पुरुषार्थ के प्रकार :

हिन्दू समाज में पुरुषार्थ के चार प्रकार बताए गए हैं, जो

1. **धर्म :-** धर्म से तात्पर्य किसी विशेष ईश्वरीय मत से नहीं, बल्कि जीवन का तरीका या आचरण की संहिता है जो स्वयं व्यक्ति के रूप में तथा समाज के एक सदस्य के रूप में एक व्यक्ति के कार्यों एवं क्रियाओं को नियमित करता है। इसका मुख्य कार्य व्यक्ति का विकास करना तथा जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के योग्य बनाना है।
2. **अर्थ :-** पुरुषार्थ में अर्थ को दूसरा चरण माना गया है अर्थ शब्द धन, मुद्रा या सम्पत्ति का पर्यायवाची नहीं है, यह भौतिक सुखों की सभी आवश्यकताओं और साधनों का द्योतक है। यह मनुष्य की शक्ति तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने

3. काम :- पुरुषार्थ में काम को तीसरा चरण माना गया है। यह एक ऐसा पुरुषार्थ है, जिसकी उपेक्षा करने की अनुमति किसी को नहीं है। डॉ. कपाड़िया के अनुसार, "काम मानव का सहज स्वभाव और भावुक जीवन व्यक्त करता है तथा उसकी काम भावना और सौन्दर्य प्रियता की वृत्ति की ओर निर्दिष्ट करता है।"

4. मोक्ष :- मोक्ष मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है यह अंतिम होते हुए भी सबसे अधिक महत्वपूर्ण पुरुषार्थ है, क्योंकि हिन्दू समाज के आधार पर मनुष्य अपना सारा जीवन मोक्ष प्राप्त करने के लिए ही व्यतीत करता है। मोक्ष का अर्थ होता है व्यक्ति के जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा हो है। जब व्यक्ति परमात्मा की शरण में चला जाता है तो उसे मोक्ष कहते हैं। मोक्ष प्राप्त करने के निम्नलिखित मार्ग है - 1. ज्ञान मार्ग 2. भक्ति मार्ग 3. कर्म योग।

पुरुषार्थ का समाजशास्त्रीय महत्व :—

1. आदर्श व्यक्ति का विकास :- सभी पुरुषार्थ आदर्श व्यक्ति में संतुलित रूप से सहायक है। हिन्दू समाज के अनुसार इन पुरुषार्थ से ही मानव जीवन का सम्पूर्ण विकास हो सकता है।

2. धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का निर्वाह :- इसके अनुसार व्यक्ति धार्मिक और सामाजिक कर्तव्यों को करता इच्छा अर्थ तथा काम से संबंधित आवश्यकताओं की वृत्ति धर्मानुसार करता है जिससे समाज में व्यवस्था बनी रहे।

3. शाश्वत मूल्य मानव जीवन के शाश्वत मूल्य अर्थ और काम को धर्म द्वारा नियंत्रित करके महत्व प्रदान किया गया है। धर्म अर्थ और काम में धर्म को सबसे अधिक महत्व दिया गया है जिससे व्यक्ति अर्थ और काम को प्राप्त करते मानव जीवन के उच्च आदर्श को भूल न जाये।

4. व्यवहारिक समन्वय :- सांसारिक और पारलौकिक जीवन में व्यवहारिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास, व्यवहारिक समन्वय द्वारा किया गया है। इसके पालन से ही व्यक्ति और समाज में समन्वय स्थापित किया गया है।